इमामे ज़माना (अ0) और महदवीयत का नज़रिय्या

इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब

260 हि0 मुताबिक़ 803 ई0 इमामे हसन असकरी (अ0) की शहादत के बाद मशीयते ख़ुदावन्दी ने बारहवें इमाम हज़रत महदी (अ0) को परद–ए–ग़ैबत में रुपोश कर दिया ताकि नूर की मशाल उठाने वाले, ज़ुल्मत की ताक़तों की साज़िश से महफ़ूज़ रहे।

ग़ैबते इमाम के ज़माने को दो हिस्सों में तक़सीम किया जाता है। दौरे ग़ैबते सुग़रा जिसकी मुद्दत 260 हि0 मुताबिक़ 873 ई0 से 329 हि0 मुताबिक़ 940 ई0 तक है और और ग़ैबते कुबरा का ज़माना जो 329 हि0 मुताबिक़ 940 ई0 से शुरु होता है। ग़ैबते सुग़रा के दौरान इमाम अपने नायबों के ज़रिए (नायबीनी अरबआ) अपने पैरवों से राब्ता रखते थे मगर इसके बाद यह ज़ाहिरी राब्ता ख़त्म गया और इमाम मुकम्मल तौर पर परद–ए–ग़ैबत में चले गए एक मुनासिब मुद्दत तक के लिए, जिसे मशिय्यते ख़ुदावन्दी तय करेगी उस वक़्त ज़हूर फरमाएँगे। हमारा अक़ीदा है कि इमामे महदी के ज़हूर के साथ ही दुनिया में हुकूमते अद्ल व निज़ामे इलाही क़ायम हो जाएगा और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात मुकम्मल राएज हो जाएँगी।

मुमकिन है यह सवाल पैदा हो कि क्या यह मुमकिन है कि किसी की इतनी लम्बी उम्र हो? जवाब यह है कि अइम्मा ऐसे इन्सान हैं जो ख़ुदावन्दे आलम के ख़ास फैज़ व इनायत के हामिल हैं। इसके हाल में कि वह इन्सान हैं ख़ास ताक़त व इख़्तियारात के मालिक भी हैं और रूहानी बुलन्दी के लिहाज़ से मानवी रुतबे की इन्तिहाई बुलन्दियों पर फाएज़ हैं, अगर उन मुक़द्दस हस्तियों में से कोई आम आम इन्सानों के बरख़िलाफ ज़मान व मकान की क़ैद से ख़ुदाए बुज़ुर्ग की ख़ास इनायत की वजह से आज़ाद हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। अगर हम ख़ुदावन्दे आलम की ज़ात, उसकी कुदरत और रूहानियत पर एतेक़ाद रखें तो हमारे लिए इस हक़ीक़त का समझना बिलकुल मुश्किल नहीं कि अइम्मा में से कोई सदियों तक मौत से महफ़ूज़ रह सकता है। क्योंकि ख़ुदावन्दे कुद्दूस जो मौत व ज़िन्दगी के क़ानून का ईजाद करने वाला है बिला शक किसी की हयात को मामूल से ज़्यादा अपनी मश्यियत के मुताबिक़ तवील कर देने पर भी क़ादिर है। किसी मुसलमान के लिए ख़ास तौर से इस मामले में किसी शक व तरद्दुद की गुन्जाइश नहीं है क्योंकि कुर्आन की रु से हर मुसलमान का यह अक़ीदा है कि हज़रत ईसा (अ0) और हज़रत ख़िज़्र (अ0) आज भी ज़िन्दा हैं और हज़रत नूह (अ0) ने सैकड़ों साल की उम्र पायी।

ग़ैबत के ज़माने में इमाम (अ०) कौन सा किरदार अदा कर रहे हैं?

मुमकिन है सवाल पैदा हो कि इमाम ग़ैबत के ज़माने में कौन सा किरदार अदा कर रहे हैं या क्या उनकी इमामत बेकार और ला हासिल

है? यह शक इमामत की हक़ीक़त और फराएज़े इस्लाम से नावाक़फियत की पैदावार है जैसा कि बार–बार बताया गया है कि इमाम सिर्फ सियासी, इज्तेमाई और फिक्री रहबरी के फराएज़ अन्जाम नहीं देता बल्कि अहम मानवी, बातिनी और रूहानी फराएज़ भी अन्जाम देता है। इमाम दुनिया वालों के लिए फैज़ाने इलाही का एक रास्ता है जो लोग इन्सानी और मानवी बुलन्दी के रास्तें पर चढ़ते चले जाते हैं इमाम उन रूहों की रहबरी करता है। इमाम के फराएज़ सिर्फ इज्तेमाई और माद्दी ही नहीं हैं बल्कि बातिनी और रूहानी भी हैं। इमाम सिर्फ जिस्म ही से नहीं बल्कि रूह से भी ताल्लुक़ रखता है और मोमिनों की रहनुमाई करता है। इमाम के इस ऊँचे और बातिनी पहलू को अगर सामने रखा जाए तो इसके ज़रिए हम ग़ैबत के ज़माने में इमाम के किरदार को समझ सकते हैं।

कुर्आने मजीद में भी बातिनी रहबरी और हिदायत की तरफ इशारा मौजूद है और इल्यास(अ0) व ख़िज़्र जैसे अम्बिया की तरफ इशारा किया गया है जो बातिनी तौर पर लोगों को नेकी की तरफ रहनुमाई करते हैं। इमाम आफ़ाक़े बातिन में भी मौजूद होता है।

जैसा कि इससे पहले भी कहा जा चुका है कि इमाम दुनिया वालों के लिए इनायत व फैज़ाने रब्बानी का वसीला है। ख़ुदा ने इन्सान को अपने फन्ने तख़लीक़ के शाहकार की हैसियत से पैदा किया है जिसमें बाज़ मलकूती सिफात भी मौजूद हैं: ''ख़लक़ल्लाहु आदम अला सूरतिही'' लेकिन सिर्फ उन इन्सानों में जो पैग़म्बर और अइम्मा हैं अपनी अज़मते तख़लीक़ के हर रुख़, हर पहलू और हर ख़ुसूसियत को ज़ाहिर करता है। इस तरह अइम्मा ख़ालिक़ की ख़ल्लाक़ियत की अज़मत का मुजस्समा होते हैं, जिस तरह एक तस्वीर बनाने वाला तमाम नक़्श अपना शाहकार बनाने के लिए खींचता है उसी तरह ख़ालिक़े काएनात ने भी ज़मीन व आसमान इन ही मुक़द्दस हस्तियों के लिए ख़ल्क किये हैं जैसा कि हदीसे क़ुदसी में आया है किः– ''ऐ मुहम्मद(स0)! अगर तुम न होते तो मैं यह ज़मीन व आसमान पैदा न करता।'' ऐसी सूरत में तमाम अइम्मा भी इसी ''हक़ीक़ते मुहम्मदी'' से हैं जैसा कि हदीस में आया है किः ''हमारा पहला भी मुहम्मद, दरमियानी भी मुहम्मद और आख़री भी मुहम्मद है।'' इस रु से सारे अइम्मा हदीसे क़ुदसी के इस जुमले के मिस्दाक़ हैं।

इसलिए हर दौर और हर ज़माने में बस्ती की बक़ा का सबब और फैज़े ख़ुदावन्दी के इन्सानों तक पहुँचने का ज़रिया हैं।

इमाम परद–ए–ग़ैबत में वह ख़ुर्शीद हैं कि जिसके चारो तरफ ज़मीन, चाँद और सितारे गर्दिश कर रहे हैं, जानकर और अन्जाने में भी तमाम मौजूदात इमाम की ज़ात से नूरे हिदायत हासिल करते हैं, इसी वजह से इमामे रिज़ा (अ0) की मश्हूर हदीस में आया है किः–''इमाम ख़ुर्शीद की तरह चमकता है कि तमाम जहान को रौशन करता है और वह उन बुलन्दियों पर जलवागर है जहाँ न नज़र उसे पा सकती है न हवासे ख़म्सा उसे छू सकते हैं।

फल्सफ–ए–ग़ैबत

महदवीयत के नज़रिये की बुनियाद क्या है? इस नज़रिये को समझने के लिए ज़रूरी है कि पहले हम फलसफ–ए–तारीख़ और हस्ती के मुताल्लिक़ इस्लामी नुकत–ए–नज़र को पहचानें। तारीख़ की तरक़्क़ी पज़ीरी और दुनिया में इन्सानी

ज़िन्दगी की आज़माइशी कैफियत और इन्सान के इन्तिख़ाब और आज़ाद इरादे के मालिक होने के इस्लामी नुक्त–ए–नज़र की रौशनी में हम अम्बिया की बेअ्सत की ज़रूरत, ख़त्मे नुबुव्वत का राज़ और बारह अइम्मा की ताअीन के असबाब और हज़रत महदी (अ0) की ग़ैबत और दोबारा ज़हूर के फलसफे को समझ सकते हैं। इस्लामी नुक्त–ए–नज़र से ख़ुदा ने इन्सान को ऐसे मौजूद के तौर पर बनाया है जो अशरफुल मख़लूक़ात और ''इरादा'', ''तअक़्कुल'', ''ईमान'' और ''इशराक़'' यानी इल्हाम का मालिक है। ख़ुदावन्दे तआला ने इन्सान को ''इरादा'' की आज़ादी और इन्तेख़ाब की तवानाई से नवाज़ा है। जो एक तरफ तो ख़ुदा की अज़ीम इनायत हैं मगर दूसरी तरफ ऐसी बड़ी ज़िम्मेदारी दी जिसे क़ुबूल करने से पहाड़ों, ज़मीन और आसमान ने इन्कार कर दिया था। अगर इरादे की आज़ादी और इन्तेख़ाब की तवानाई न हो तो इन्सान जानवर और चौपायों से भी नीचे गिर जाए।

मगर इन्तेख़ाब उस वक़्त कारआमद होता है जब राहे रास्त वाज़ेह होती है। ख़ुदावन्दे आलम ने जिसकी इनायत उसके वुजूद का लाज़मा है ''नुबुव्वत'' का सिलसिला इसी मक़सद के हुसूल के लिए नीज़ इन्सान की सआदत और नजात के ज़राए फराहम करने के लिए ही क़ायम किया। इन्सान की रूहानी तरक़्क़ी के साथ–साथ एक के बाद एक पैग़म्बर भेजे गए और मुख़तलिफ हक़ाएक़ के चेहरे बेनक़ाब किये यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद की बेअ्सत और नुज़ूले क़ुर्आन के साथ ही ''हक़ीक़त'' और ''पैग़ाम'' मुकम्मल तौर पर बन्दों तक पहुँच गए, दीन की तकमील हो गई, उसके अरकान और असली ख़ुतूत तैय हो गए। चूँकि ''पैग़ाम'' पहुँचाने का काम मुकम्मल हो चुका था इसलिए हज़रत मुहम्मद (स0) के साथ ही बेअ्सते अम्बिया का सिलसिला ख़त्म हो गया। और हज़रत ख़ातमुल अम्बिया (स0) की रिसालत हर ज़माने के लिए लाज़मी तौर पर क़ाबिले पैरवी हो गई और इसके बाद से क़यामत तक तमाम इन्सानों की ज़िम्मेदारी है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की पैरवी करें।

इसके बाद शरह व तफ्सीर और इजरा व निफाज़ का मरहला सामने आता है क़ुर्आन में ''पयाम'' यकजा पहुँच गया मगर आम इन्सानों के लिए कलामे इलाही की बारीकियों का समझना मुमकिन न था इसलिए ज़रूरत थी ऐसे ख़ुदाई अफ़राद की जो एक तरफ तो हदीसों के ज़रिए पयामे क़ुर्आनी के तमाम गोशों और बारीकियों की तफसीर व तश्रीह और सीरते पैग़म्बर की तफसील पेश करें दूसरी तरह अमली तौर पर सबक़ दें कि मुख़तलिफ हालात में इन्सान किस तरह की हिकमते अमली इख़्तियार करे। इसके अलावा क़ुर्आन के साथ–साथ ज़रूरत थी कि कुछ ऐसे अफराद हों जो इन्सानों के लिए ''उसव–ए–जावेद'' और अमली नमूना हों, इस वजह से ख़ुदा ने ''इमामत'' का सिलसिला क़ायम किया।

लेकिन इन्सानों की तरबियत (नुबुव्वते आम्मः) और ख़ुदाई ''पयाम'' पूरे तौर पर पहुँच जाने के बाद (नुबुव्वते ख़ास्सः) जब मुअल्लिमाने इलाही और रहबरों ने इसकी (मन्सबे इमामत की) तश्रीह कर दी तो मश्यियते ख़ुदावन्दी का रुख़ उस तरफ हुआ कि एक इमाम को परद–ए–ग़ैबत में रूपोश कर दे ताकि पैग़म्बरों और पिछले इमामों की तालीमात की रोशनी में और अपनी अक़्ल की मदद और फिक्री तवानाई के ज़रिए अपने इज्तेहाद को सही तौर पर पूरा करें। ग़ैबत

बक़िया ....पेज 8 पर

को कलेजे से लगाकर रखा था। आख़िर 61 हि० आ गया इमामे हुसैन (अ०) कर्बला पहुँच चुके थे। फिर आशूर का सूरज कर्बला के ख़ूनी उफ़ुक़ से निकला और बुलन्द होकर ढलने लगा। यह क़यामत के सूरज से कम न था। अस्र का वक़्त आ गया। मअरक–ए–कर्बला अपने आख़री नुक़्ते पर पहुँच चुका है। हज़रत उम्मे सलमा मदीने ही में थीं। अस्र के वक़्त आँख लग गई। ख़्वाब में देखा, सरवरे दो आलम (स०) तशरीफ लाए हैं। चेहर–ए–मुबारक पर बे इन्तिहा रन्ज व ग़म के आसार हैं। महासिने मुबारक और सरे अक़दस पर ख़ाक पड़ी हुई है। आँखों से मुसलसल आँसू बरस रहे हैं। उम्मे सलमा यह अन्दोहनाक मन्ज़र देखकर बर्दाश्त न कर सकीं और ख़ुद भी रोने लगीं फिर अर्ज़ की! ऐ ख़ुदा के आख़री रसूल! (स०) आप इतने रंजीदा क्यों हैं। आप पर कौन सी बात गराँ गुज़र गई। रसूलुल्लाह (स०) ने फरमायाः–

उम्मे सलमा! मैं अभी–अभी हुसैन को शहीद होते हुए देख आया हूँ। रसूल (स०) की बीवी की आँख खुल गई। घबराई हुई और काँपती हुई उस हुजरे की तरफ दौड़ीं जहाँ पैग़म्बर (स०) की अता की हुई मिट्टी एक शीशे में रखी हुई थी। उम्मुलमोमिनीन ने उसे ग़ौर से देखकर रोना शुरू कर दिया क्योंकि अब इस शीशे में मिट्टी न थी बल्कि उससे तो ताज़ा ख़ून उबल रहा था।

□□□

बक़िया इमामे ज़माना (अ०) और महदवीयत..................

के बाद का दौर ''इज्तेहाद'' का दौर है। इन्सानों को चाहिए कि वह अपने इल्म और अपनी अक़्ल का सही इस्तेमाल करें ताकि वही और सीरत पैग़म्बर व अइम्मा की शम–ए–हिदायत और मश्अले रहबरी से अपने मसाएल के हल के सिलसिले में फाएदा हासिल करें। आख़िरकार मश्य्यिते इलाही दोबारा इमाम (अ०) को परद–ए–ग़ैबत से ज़ाहिर करेगी। ताकि दुनिया में नज़रियाती समाज और मिसाली निज़ाम क़ायम हो। इन्सान दौरे ग़ैबत में एक इम्तिहानी और आज़माइशी मरहले से दोचार है, इसके बाद ख़ुदाई मुअल्लिम दोबारा ज़ाहिर होगा और सही को ग़लत से और हक़ को बातिल से अलग कर देगा।

हम इस हिदायत के पूरे ख़ुदाई इन्तिज़ाम को एक स्कूल से तश्बीह दे सकते हैं, गोया पहले मुख़्तलिफ दर्जों की तालीम मुकम्मल कराई गई।(अम्बिया की बेअ्सत) और तहरीरी रहनुमाई भेजी गई (वही) आख़री दर्जे की नज़रियाती तकमील शरीअत की तकमील की सूरत में की गई (पैग़म्बरे इस्लाम की बेअ्सत) फिर ग्यारह इमामों ने उस तालीम को अमली तौर पर करके दिखाया। (इमामत का दौर) इसके बाद मुअल्लिम को ग़ैबत के पर्दे में छुपा लिया गया और तालिबे इल्मों को छोड़ दिया गया कि अक़्द व समझ और इस्तेदाद के बल बूते पर इम्तिहान दें (ग़ैबत का ज़माना) इसके बाद मुअल्लिम दोबारा ज़ाहिर होंगे और सही जवाब की अमली तौर पर निशानदही फरमाएँगे (ज़हूर) इस तश्बीह के ज़रिए हम ग़ैबत के फलसफे को थोड़ा सा समझ सकते हैं।